मेरे चचा
नीकोस
लेखनः जूली डेल्टन
चित्रः मार्क साइमन्ट
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

हर गर्मियों की छुट्टियों में हैलेना अपने चचा नीकोस के पास समय बिताने आती है। वे यूनान (ग्रीस) की पहाड़ियों में बसे एक छोटे से गाँव मे रहते हैं। और जो हमेशा होता है, वही इस बार भी होता है। वह बस से उतरती है और पुआल की टोपी पहने चचा नीकोस कैफे के सामने बैठे दिखते हैं। "लो आ गई मेरी भतीजी हैलेना," चचा अपने दोस्तों से कहते हैं। तब दोनों मिल कर खाने-पीने के सामान की ख़रीददारी करते हैं। वे रात के खाने के लिए जैतून (ऑलिव), डबलरोटी व मेमने की बोटियों से लद, एक धूल भरी टैक्सी में बैठ घर पहुँचते हैं। चचा के घर में एक शानदार बगीचा है। "इतना बड़ा कि घर के फाटक से शुरु हो पूरे अहाते में फैला है, ठेठ घर की सीढ़ियों तक।"

हैलेना को बाग की देखभाल में चचा की मदद करना अच्छा लगता है। वे दोनों सब्ज़ियों की क्यारियों, फूलों ओर फलों के पेड़ों को संभालते हैं। इस दिलचस्प काम में दिन गुज़ारने के बाद वे यह भी तय करते हैं कि अगले दिन क्या-क्या करना है। तब वे चचा के एक कमरे वाले घर में पीतल से बने पलंगों पर सोते हैं, जिसके गद्दे ओर रज़ाइयों के किनारे पीले पड़ चुके हैं।

*माय अंकल नीकोस* के शब्द और चित्र यूनान के रंगों से दमकते हैं। यह पुस्तक यूनान के शान्त ग्रामीण जीवन और घनिष्ठ रिश्तों की अद्‌भुत, उल्लास भरी छवि को प्रस्तुत करती है।

# मेरे चचा नीकोस

लेखनः जूली डेल्टन

चित्रः मार्क साइमन्ट

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मेरे दो कोम्बरोई (बेस्ट मैन) – जॉन व जॉर्ज के लिए।

चचा नीकोस का बाग इतना बड़ा है कि वह पूरे अहाते में पसर, उनके छोटे-से घर के दरवाज़े की सीढ़ियों तक जाता है। और वह वहाँ भी नहीं रुकता। मॉर्निंग ग्लोरी की लता के बड़े बैंगनी फूल उनकी खिड़कियों पर चढ़े आते हैं और दरवाज़े के ऊपर बनी जाली पर जंगली अंगूरों की लता छाई हुई है।

चचा नीकोस पहाड़ियों में बसे एक छोटे यूनानी गाँव में अकेले रहते हैं। वह एथेन्स से बहुत दूर है, जहाँ वे अपनी जवानी के दिनों में जूतियाँ बनाने का काम किया करते थे। मैं गर्मियों की छुट्टियों में हर दूसरे सप्ताहान्त उनके साथ रहने जाती हूँ।

शुक्रवार की दोपहर मैं एथेन्स से ड्रोसिया की बस पकड़ती हूँ। ड्रोसिया में उतर कर आधे किलोमीटर पैदल चल मैं एरमाउ स्ट्रीट के बड़े कैफे तक पहुँच जाती हूँ, जहाँ चचा अपने दोस्तों के साथ बाहर लगी मेज़ों में से एक पर बैठे बैकगैमन (चौसर जैसा एक खेल) खेलते मिलते हैं। चचा और उनके दोस्त पुआल की टोप पहने और गर्मी से बचने के लिए ओज़ो (सौंफ से बनी शराब) पीते मिलते हैं।

"यह मेरे भाई की बेटी है," चचा नीकोस मुझे अपने पास खींच कर बोले। उन्होंने मेरे लिए एक कुर्सी खींची। मैंने मुस्कुरा कर पूछा कि खेल में जीत कौन रहा है। चचा हंस कर खुद की ओर इशारा करते हैं। कुछ ही देर बाद चचा बोले, "घर जाने का समय हो गया है, क्या तुम्हें भी यह नहीं लगता, *हैलेनाकी माउ*?" वे मुझे इसी डाक-नाम से पुकारते हैं। इसका मतलब होता है, "मेरी नन्ही हैलेना।"

उन्होंने मेज़ पर बारह द्राखमा (यूनानी सिक्का) रखे और हम पास की दुकान में घुस गए। हमने रात के खाने के लिए दो डबलरोटियाँ और तुरन्त खाने की लिए किशमिश वाले बन ख़रीदे।

हम नानबाई की दुकान से निकल कसाई की दुकान पर गए, जहाँ कसाई ने हमें भूरे कागज़ में लपेट कर दो मेमने के चॉप दिए। ''ओरेस्टे (पहाड़ पर रहने वाला) यह लीजिए नीकोस,'' कसाई ने मुस्कुरा कर कहा।

तब हम परचून की दुकान में घुसे और हमने एक किलो जैतून ख़रीदे। मुझे मोटे, रसीले हरे जैतून पसन्द हैं, पर चचा को झुर्रीदार काले। सो हमने परचून वाले से आधे हरे और आधे काले जैतून लिए। साथ ही कोका कोला की दो बोतलें भी मांगीं। ''अभी के लिए इतनी काफ़ी होंगी, है ना, *हैलेनाकी माउ?*'' चचा नीकोस ने जानना चाहा।

तब हम दुकान से निकल फुटपाथ पर बढ़े और उस कोने तक गए, जहाँ टैक्सी वाले छाया में अपनी गाड़ियाँ खड़ी करते हैं। चचा हमेशा टैक्सी लेते हैं, क्योंकि उनके पास अपनी गाड़ी नहीं है। उनके गाँव के ज़्यादातर लोग टैक्सियों का ही इस्तमाल करते हैं।

"एलेकॉस यह मेरी भतीजी है!" चचा ने टैक्सी चालक से कहा। एलेकॉस मुड़ कर अपने झक्क सफ़ेद दाँतों को दिखाते मुस्कुराया। टैक्सी घुमावदार, धूल भरी सड़क पर खड़खड़ाती आगे बढ़ चली।

सड़क से चचा का घर नज़र नहीं आता - बस बागान दिखता है और एक छोटा हरा फाटक। हम फाटक के पास उतरे, चचा ने किराया चुकाया और मैं खरीदे हुए सामन को उठा अन्दर ले आई।

चचा का घर इतना छोटा है कि खाने की मेज़ सोने के कमरे में है - या यों कहें कि सोने के पलंग खाने के कमरे में हैं। यह व्यवस्था बड़ी आरामदेह है, क्योंकि सब कुछ एक ही बड़े-से कमरे में है।

सिवा रसोई-घर के, जो कमरे के एक ओर बना है। उसमें एक बड़ा, काला, लोहे का चूल्हा है जिसे सर्दियों में काम में लिया जाता है। रसोई में हमेशा अंधेरा रहता है और उसमें लकड़ियों की महक बसी हुई है।

''मैं मेज़ लगाती हूँ,'' मैंने चचा से कहा।

चचा ने हाँ में सिर हिलाया और बोले, ''मेज़पोश अल्मारी में है।''

जब मैं थालियाँ लगा रही थी चचा घर के पिछवाड़े गए, जहाँ खाना पकाने का गड्ढा है। उसके ऊपर सरो पेड़ की सूखी टहनियाँ मधुमक्खियों के छत्ते के आकार में जमाई रखी हुई थीं। चचा ने एक माचिस की तीली से कपड़े की एक लीरी जलाई और उसे ढ़ेरी पर डाल दी। मैं ढ़ेरी में जमी सरो की टहनियों को जल कर गड्ढे में गिरते देखती रही।

जब अंगारे अच्छे से लाल हो गए, चचा ने गड्ढे पर एक जाली रखी और मेमने के चॉप उस पर धर दिए। जब वे भुन कर भूरे हो चले, चचा ने उन पर नींबू वाला तेल डाला। उन्होंने मुझे माँस पर सूखा मसाला डालने दिया। "तुम मेज़ के लिए कुछ फूल क्यों नहीं तोड़ लेतीं?" उन्होंने धुएं के बीच से कहा।

मैंने फूल काटने का चाकू उठाया। मैं क्यारियों के बीच एहतियात से चली। "ये अजीब सी हरी चीज़ें क्या हैं?" मैंने चिल्ला कर पूछा।

"प्याज़," जवाब मिला। "और उसके पास शलगम हैं और दूसरी ओर रूसी लैटिस (सलाद के पत्ते)।"

चचा नीकोस के बाग में कई पेड़ भी हैं। दो रुपहली हरी पत्तियों वाले जैतून के, एक नाशपाती का, एक चैरी का, तीन खुबानी के, और तीन ही अंजीर के। चैरी के फल पक चुके हैं, उतारे जाने को तैयार हैं।

बाग में उनका एक पुराना काला सूट पहने एक बिजूका भी खड़ा है। पर उसके बावजूद कौवे बिना डरे आ चैरी के फल खा जाते है।

मैं उन सबको पार कर गुलाब की झाड़ियों के पास पहुँची। खाने की मेज़ वाले गुलदान के लिए मैं हमेशा ही गुलाब चुनती हूँ - गुलाबी रंग वाले, जो पूरी तरह खिले ना हों। कभी मैं फाटक के बिलकुल पास जा गुलबहार के फूल भी ले आती हूँ। पर ज़्यादातर गुलाब ही।

जब तक मैं फूल ले कर पहुँचती हूँ, मेमने के चॉप और डबल-रोटी के तीन मोटे टुकड़े दोनों तश्तरियों में परोसे जा चुके थे। मेज़ के बीचोंबीच एक बड़े कटोरे में रूसी लैटिस और जैतून का सलाद था, जिसमें नींबू और जैतून का तेल डला हुआ था। हमने अपने काँटे उठाए और सलाद खाना शुरु किया, सीधे कटोरे में से ही। और तब तक खाते गए जब तक आखिरी जैतून खत्म नहीं हो गया। खाने के बाद हमने बर्तन नहीं माँजे। चचा ने कहा कि "हम इन्हें सुबह साफ़ कर लेंगे।" सो हमने उन्हें पम्प के पास रख दिया।

खाना खत्म करने के बाद चचा ने अपनी तोंद को सहलाया और अपनी पीठ कुर्सी पर टेक ली। "अब बाग को देखने का समय हो गया है," वे बोले। यह वह बड़ा काम है जिसे खत्म करते-करते अंधेरा हो जाएगा। मैंने उनका हाथ पकड़ा और हमने काम शुरु कर दिया।

चचा ने टमाटर के पत्ते ऊपर उठाए और बोले कि उनमें फिर से कीड़े लगने लगे हैं। "और पाखी चैरियों पर हमला कर रही हैं," मैंने जोड़ा।

चचा ने बताया कि किन पौधों को ज़्यादा पानी की ज़रूरत है, और मैंने यह याद कर लिया, क्योंकि शनिवार को पेड़-पौधों को पानी पिलाने की ज़िम्मेदारी मेरी है।

तब उन्होंने मुझे वह जगह भी दिखाई जहाँ कल नए, छोटे लैटिस के पौधे रोपे जाने थे। "और कुछ उगाने के लिए जगह ही नहीं है चचा," मैंने कहा।

"यहाँ, ठीक यहाँ *हैलेनाकी माउ,* ठीक यहाँ," उन्होंने हाथ से इशारा कर जगह दिखाई।

हम और आगे बढ़े और चचा को एक छोटा नाशपाती का पेड़ दिखा जिसकी एक डाल लगभग टूट ही चुकी थी। डाल के सिरे पर दो नाशपातियाँ उगी हुई थीं। "हमें इन्हें बचाने की कोशिश करनी चाहिए," चचा ने कहा।

वे घर में गए और एक सफेद कपड़े का टुकड़ा और मोमबत्ती ले आए। उन्होंने मामबत्ती जलाई। मैंने टूटी डाल को सीधा कर पकड़ा। चचा ने उस टूटी जगह पर पिघली मोम टपकाई। गरम मोम ने डाल को जोड़ा। चचा बोले "काम पूरा नहीं हुआ है, हमें इसे ऐसे ही सीधा रखना होगा।" उन्होंने डाल के गिर्द कपड़ा लपेटा और उसे भी मोम से सीलबन्द कर दिया। मैं डाल को सीधे पकड़े रही ओर चचा ने खपच्चियों की मदद से डाल को पेड़ के तने से मज़बूती से बांध दिया, ताकि तेज़ हवा से भी वह टूटे नहीं।

जब हम अपना काम पूरा कर चुके, चचा ने एक बड़े रूमाल से अपना चेहरा पोंछा। हम एक ठूंठ पर बैठे और अपने किए हुए काम को निहारने लगे। "हमने नाशपातियों को बचा लिया," मैं बोली।

"पर शायद हमें हर दिन इसे जाँचना होगा।"

जैसे ही सूरज पहाड़ियों के शिखरों के नीचे उतरा, चचा ने जम्हाई ली और बोले, "क्या लगता है तुम्हें, सोने का समय हो गया है?" मुझे भी यही लगा, सो मैं अपने दाँत मांजने का ब्रश लाने अन्दर गई।

मैंने पम्प के पास ही मंजन किया। पम्प चलाते-चलाते कुल्ला करना आसान नहीं है। दरअसल चचा के घर में नल नहीं हैं, जैसे हमारे शहर वाले घर में है। मंजन करने के बाद मैंने हाथ-मुँह भी धोया। मेरी कमीज़ कुछ गीली हो गई। सो अपने रात के कपड़े पहनने के बाद मैंने अपनी कमीज़ सूखने के लिए तार पर डाल दी।

चचा नीकोस के घर में पीतल से बने तीन पलंग हैं। उन पर परों से भरे गद्दे ओर रज़ाइयाँ हैं जिनके किनार पीले पड़ चुके हैं। मेरा बिस्तर कोने वाला है। उसके ठीक ऊपर, दीवार पर एक तिकोना आला है। आले पर यीशू, माता मेरी और संत जॉर्ज की तस्वीरें रखी हैं। एक मोमबत्ती वहाँ पूरी रात जला करती है। सो मुझे अंधेरे का डर नहीं लगता।

चचा कमरे के दूसरे कोने में सोते हैं।

"हम कल पेड़-पौधों को पानी देंगे ओर लैटिस बोएंगे। क्या ख़याल है, *हैलेनाकी माउ*?"

"और हम चैरी और नासपाती को भी जाँचेंगे और ..."

और चचा खर्राटे लेने लगे, जैसे वे हमेशा करते हैं। मैं उनको शुभ रात्रि कहूँ, उसके भी पहले!